मुखपृष्ठ
साहित्यकारों की वेबपत्रिका
साहित्यसुधा
वर्ष: 5, अंक 103, फरवरी(द्वितीय), 2021

मंगल महतो

(आठवां भाग)

चंदेश्वर प्रसाद

गतांक से आगे

भाग-एगारह-

एह सुखार में गरीब आउर गरीब होखे लागल. जमा अन्न आ धन खा पीके बराबर क देहलस. रोजगार के अभाव हो गइल. कतहीं काम ना मिले त लोग गांव छोड़के पलायन करे लागल. जब गांव खाली हो गइल त एक दिन सुजान महतो लोग से पुछे लगलें कि कहां गइला पर रोजगार मिली? बाकिर केहूं सटीक जबाब ना देवे. पहिले से घर में राखल जौ आ मकई दस किलों ले बांच गइल रहे. ओकरे के बंचा बंचा के खाइल जाव.

मंगल के माई आ बहिन मजुरी करे लागल रहीं. सुजान महतो से जादे काम मंगल के मिले लागल रहे. काहे कि सुजन महतो के ताकत दिन पर दिन कम होत गइल. दुबरा गइला से हडी लउकत रहे. जबकि मंगल अब पूरा बाइस बरस के हो गइल रहलें. जवान रहस. नया उमंग आ जोश के साथे काम करस. उनकर मीट बोली, मुसकात ओठ, हंसला पर चमकत उजर दांत बड़ा निक लागे. देखे वाला के मन गुदगुदावे.

सुजन महतो के घर मे जताना लोग कमाये वाला ओतनही खाये वाला रहे. एह से अकाल के समय भी उ लोग गांव से पलायन ना कइलस आ गांवे में रह गइल. जब केहू के काम पड़े त सुजान महतो के साथे उनुकर मेहर, बेटा आ बेटी चारो चल जाव लोग. मिल जुल के काम करे में दिन कट जाव आ एक साथे चार आदमी के मजुरियों मिल जाव. एह से अब घर में खाना रोज बने. उपास रहे के नौबत ना आवे.

जब काम ना मिले त मंगल सोचे लागस कि ई कवन कमाई हटे कि माई, बाप आ बहिन साथे काम करे के पडत बाटे. अतना कमइला के बादो ना ठीक से कपड़ा लत्ता मिलत बा ना भरपेट अन्न दाना. एही में कवनों हित नाता के लोग आ जाता त पइसा के अभाव में मन पछिया जाता. सेवा सत्कार करे खातिर सोचे के पड़त बा.

उ सोचे लगले कि माई बाबू के उमिर रोज कम होता. उ लोग कातना दिन साथ दिही. बहिन के विआह हो जाइत त माई बाबू गंगा नहा लित लोग. एह से कबनों कमाऊ लइका देख के सुरसती के हाथ पीला कइल जरूरी बा.

एक दिन ब्लॉक पर गिरीह उदयोग पर सेमिनार लागल रहे. जेमे मंगल देखे आ सुने खातिर गइल रहलें. ओह सेमिनार मे सरकार के प्रतिनिधि लोग आइल रहे जे खेती बाड़ी के अलावा मुरगी फारम, बतख आ मधुमाछी पालन, बकरी पालन, डेयरी उदयोग आदि पर जानकारी आ ओकर ट्रेनिंग के बारे में बतावत रहे. कहां कहां एकरा पर मदद मिली, उहे बतावल गईल. मंगल के राजेंद्रर कृषि विश्वविद्यालय पूसा सबसे निचका लागल.

मंगल एकरा बारे में अपना गांव में चरचा कइले. अपना सोंच के बारे में बतावलें, बाकिर केहू सही दिशा ना दे पावे, उलटे मजाक करे कि मंगलो पगला गइल बा. उ आसमान के जोन्ही तुड़े के सपना देखता.

कहल गइल बा कि " हिम्मत-ए- मर्दा मदद-ए- खुदा!" जब आदमी कुछ करे के बीडा उठा ली त ओकर किस्मतो ओकरा पाछे पाछे चले लागेला. भगवान ओकर मदद करेलेंन. आगे राह चाहे कांटा से भरल होखे, ओकरा के ईश्वर आसान बना देलें.

अपना धुन के पाका मंगल एक दिन राजेंद्रर कृषि विश्वविद्यालय पूसा खातिर घर से निकल पड़लें. राहता में ई सोच के मन घबराये लागल कि उहां केकरा से बात करेंम. पढ़ल लिखल बड़का बड़का विद्वान धुरंधर लोग होई. उ गांव के एगो अनपढ़ गंवार, ओह लोग से कइसे बात कर पइहें? उ सोचे लगलें कि ओह लोग से का कहब? ओह लोग के का बेवहार रही. फेरू उनुकर मन कहलस कि चाहे जवन होखो, हटे लोग त आदमीये नूं. फेरू आदमी आदमी मे का फरक?

मंगल डरते डरते आफिस में पहुंचले. एगो अधिकारी के सामने हाथ जोड़के प्रणाम कइलें. अधिकारी के कुरसी पर बइठे के इशारा पाके बइठ गइले. दुनू तरफ से घरेलू उदयोग पर बतकही होखे लागल. मंगल मधुमाछी पालन करे खातिर आपन इच्छा जतइलें. तब अधिकारी कहले कि एकर टरेलिंग लेवे के पड़ी.

उहां मंगल आठ दस दिन रह गइले. अपना काम के बारे में टरेनिंग लेहलें. मधु के उतपाद आ ओकर कहां कहां खपत होई, ओकरा बाजारों के बारे में जानकारी लिहलें. सब कुछ सीख लेला पर मंगल के एगो निजी मधुमाछी पालन उद्योग में ओही जी काम मिल गइल.

काम लगला से मंगल के मन गदगद रहे. उ ठीक समय पर उठस आ आपन काम करस. मधुमाछी पालन के हर तरह के बारीकी से अवगत हो गइल रहलें, जेसे कवनों परेशानी ना होखे. कबही कबही ओह घरेलू उद्योग के मालिक कवनों काम भूला जास त मंगल ओकरा के इयाद दिला देस. कवनों तरह के दिक्कत आइला पर आपन सुझाओ देस. मालिक के अइसन लागे जइसे उ नोकर ना उनुकरा घर के सदस्य होखस. एह तरीका से काम आगे बढ़े लागल.

मालिक मंगल के काम से खुश होके उनुकर महीना के रकम बढा दिहले. अइसही काम करत मंगल के छह माह बीत गइल. पइसा बढ़ला के बाद मंगल अपना घरे डाक से कुछ रुपिया

मनिआर्डर भेज देस, जे से उनुका माई,बाबू आ बहिन के राहत मिलो.

सुजान महतो के घरे जब पहली बार डाक घर के मुंशी जी मनिआर्डर लेके पहुंचलें, त पूरा परिवार खुशी से नाच उठल रहे. मंगल हर माह तीन हजार रुपिया भेज देस. घर में दाल, भात, तरकारी के साथे कभी दुध त कभी मउसमी फल कीन के आ जाव. ओह रुपिया से मंगल के परिवार ठीक ठाक चले लागल. खुशी में एक दिन सुरसती अपना माई से कहली,

“अतना बढ़िया नीमन नीमन चीज त खाए के कबहीं ना मिलत रल माई. काली माई के किरपा हमरा भइया पर बनल रहो.” बेटी के बात सुनके उनुकर माई सरधा कहली, “ ठीके कहत बारू बबुनी, आदमी के सुख मिलला पर घमंड ना करे के चाही.”

एक दिन मंगल के छुटी रहे. उ एकांत में बइठ के सोचत रहलें. उ इहे बात सोचत रहले कि ई घरेलू उदयोग उनका घरे रहित त उ नोकर ना मालिक बन के रहते. साथ में माई,बाबू आ बहिन के दुसरा के इहां बेगारी ना करे के पड़ीत. केहूं के टोना ना सहे के पड़ीत, सभे सुख चैन से रहित.

सबसे बड़ बात ई रहे कि गांव में प्रकृति परवेश मधुमाछी पालन के लायक रहे. हर मउसम में मधुमछियन के खोराक आ फूल के रस मिले के साधन रहे. जाड़ा के दिन में सरसो के फूल, तिसी, मटर के अलावा आम के मोजर, महुआ के कोंच, गेंदा, चमेली, सूरजमुखी के फूल रहे. गरमी आ बरसातो में कवनो चीज के कमी ना लउके. कहल जाला कि मधुमछियन के तरह तरह के गाछ पर बइठला से ओमें ठीके से फल फूल धरेला. गांव जवार में अन्न, फल, तेलहन, दलहन के आमद बढ़ जाला. हर जगे खुशहाली रहीं. मंगल अपना मन के बात अपना मालिक से कहे के ताक में रहले,बाकिर मउका ना मिले. एक माह अइसहीं टर गइल.

एक दिन मंगल के मालिक बड़ा खुश रहले. उनुका माई, बाबू, बहिन आ खेत बारी के जानकारी लेत रहलें. मंगल के दयनीय हालत जान के मालिक के बड़ा दुख भइल. एही मउका पर मंगल अपना घरे मधुमाछी पालन के ईकाई शुरू करे के बात बता दिहलें.

उनुकर मालिक खुश होके कहले, “ गांव में ई उदयोग आछा चली. तू काम शुरू करअ. सब खरचा हमार रही. जरूरत के अनुसार अपना गांव के कुछ लोग के रख लिहअ. मधुमाछी पालन के लागत में जेतना खरच होई, उ सब जोड़ दिहअ. एह काम में हमरा के तू सय में केवल 25 रुपिया दिहअ. ”

“ कब से काम शुरू कइल जाव.” मंगल पूछले.

“ आज तू 12 बजे वाली गाड़ी से अपना गांव निकल जा. हम तोहरा के मधुमाछी पालन खातिर रकम दे दे तानी. जहां इक्छा करे काम ठीक ठाक करअ. एक दिन तोहरा घरे पहुंचेम आ मिल जुल के काम शुरु हो जाई. चिंता मत करअ. ईश्वर सब काम ठीके करींहेन. ”

“ काम चालू भइला के बादों रउरा हाप्ता दु हाप्ता में आवत रहे के पड़ी. ”

“ ठीक बा मंगल, आवत रहेम.”

भाग- बारेह

मंगल के घर पर मधुमाछी पालन के तइयारी शुरू हो गइल. मंगल अपना माई बाबू से राय

लेके काम में लागल रहलें. आपन काम शुरू होखला से सभे मने मन खुश रहे. एही बीच सुरसती कहली,

‘‘ ए माई, जब घरही काम बा त हमनी बाहर काम करे नानूं जाएम सन? बुझाता कि हमनी जल्दीय धनिक हो जाइबसन. तब एगो रेडियो आ एगो टीबी कीन लेवल जाई. जेसे गांव जवार के समाचार मिली आ फिलिम देख के तानी मनो हरीहर कइल जाई.” सुरसती के बतकही पर सभे हंस पड़ल. सुजान महतो के मुंह से निकल,

“ बबुआ, आपन काम आपने होला. दुसरा के बेगारी खटला से लाख निमन आपन काम. रोजे ठीक से नून रोटी मिल जाई. देह तोपे खातिर मोट झोट बस्तर मिलो. बरखा बुनी में लुकाए के एगो छाजन मिल जाव. घर पर आइल पाहुन के मीठ बोली के साथे एक गिलास पानी दिआ जाव. बस, भगवान से हमरा आउर कुछो ना चाही. ”

“ बाबुजी, खाली राउर नेहछोह मिलत रहो. भगवान किरपा से सब कुछ हो जाई. देखते बानी, अपने आस पास गजब हाल बा. केहू भुख पियास से बिलबिलाता, केहू दुख दरद से चिल्लाता. रोग भइला पर दवा दारू नइखे होत आ बाप दादा चिल्लाता. कहे के मतलब कि पइसा रहे त एह सब के रोकल जा सकता. ”

तभी घर के बाहर जय काली मइया..., जय काली मइया...जय दुरगा मइया...के जोरदार नारा लागत रहे. ई आवाज सुनके मंगल अपना माई से पुछले कि ई कइसन आवाज हटे त सरधा कहे लगली,

“ आज काली माई के पूजा हटे. गांव में खुशहाली खातिर आज खस्सी, कबतर, सुअर के बलि दिआई. उहे पंडी जी खपर ले के आगे आगे जात बानी आ पीछे से भगत लोग जयकारा लगावत बा. पंडी जी कहत रहले कि काली माई के नाखुश भइला से गांव में सुखार आइल रल. उनुका के मनावे खातिर पुड़ी अकुरी से पूजा होई आ बलि दिआई. देवी देवता के खुश भइला से जोरदार बरखा होई. खेतन में तरह तरह के फसल लहलहाई.

एतना बात होते रहे तले भीड़ मंगल के घर के सामने आ गइल. जेमे बबुआन आ नान्ह जात सभे रहे. कहल गइल बा कि संकट अइला पर बाघ बकरी एके घाट पर पानी पिएला लोग. भीड़ में सयकरों लोग काली माई के जयकारा लगावत रहे. भगतन के हाथन में खस्सी, कबूतर आ सुअर रहे. मंगल भीड़ के आगे हाथ जोड़के खड़ा हो गइलें आ प्रणामा पाती के बाद कहले कि बलि प्रथा के बंद कइल जाव, ई त जीव हिंसा होता. जीव हिंसा से देवी देवता खुश ना नाखुश हो जाई लोग.

भीड़ के आगा भड़कावन सिंह रहले. मंगल के बात सुनके सब कोई के रोक दिहले. सुभग महतो के मंगल के बात आछा ना लागल, उ पूछे लगले,

“ ई का कहतारअ बबुओ, परदेस में रहके इहे सब सीखत रहिस का? ई बलि प्रथा तक आदम जुग से आ रहल बाटे. बिना पूजा के इच्छा पुरती कइसे होई?”

“बाबा, आदम जुग के बात छोड़ी. भगवान खस्सी, कबूतर आ सुअर जइसन सब जीव जंतु के अपने हाथे से बनवले बाड़ेंन. जीव हत्या अपराध हटे. ओकनी के बलि देला से कुछो ना मिली.

भगवान के मनावे खातिर मंगल गीत भा पूजा होखो, बाकिर जीव हत्या ना. जीव के दुख तकलीफ होई त उ हमरा तहरा के सरापी, वरदान ना दिही?"

मंगल के बात सुनके छगन मांझी बोललें," तब हमनी का करीं? वेद पुरान में पूजा के दउरान बलि देवे के प्रथा बाटे. ई सब शास्तरन में काहे लिखल बाटे."

" त छगन भइया तूं अपने के बलि चढा द. "

मंगल के एह बात पर छगन मांझी खिसिया के नासतिक आ अधरमी जइसन उटपटांग बात बोले लगलें, तब समुझावत मंगल कहले,

" 'तूं आ हम' के बलि देवे के कहनी ह. एमें खिसियाए के कवनों बात नइखे. 'तू आ हम' घमंड के कहल जाला. अहंकार के बलि देला से समाज में सदाचार आई. देवी देवता खुश होइहें. लोग बाग निमन से रहीं. "

तब छगन मांझी भीड़ से कहलें, " भाई सबे आगे बढ़ी. एह बतकुचन से कवनों फायदा नइखे. भीड़ आगे डेग बढवलस त मंगल आउरी आगा बढ़ के घेर लेहलें आ निहारा कइलें,

" रउरा लोगिन के हमार बात बानी सभे."

बाकिर कुलदीप भगत मंगल के समुझावत बोललें, "बबुआ तूं, तू कुल खानदान आ समाज के नाक हउव त हमनी के मुंह उजियार करबअ. जे तरी बाबु साहेब के लइका के आग से बचइलअ ओही तरी हमनियों के सड़ल पाक से बचाव. तोहरा पर हमनी के भरोसा बाटे."

" तब बाबा, हमरे के काली मईया के आगे बलि दे दिहीं लोग. सब देवी देवता खुश हो जाई लोग. गांव खुशहाल हो जाई. " मंगल के बलि वाला बात से नाराज नरेश भगत कहले,

" जा बबुआ... अपना घरे जा...हमनी के आगे बढे दअ. देर मत करअ."

" बाबा, हम रउरा लोग के साथे चलेब, पहिले हमार बलि चढ़ी, ओकरा बादे खस्सी, कबूतर आ सुअर के बलि होई."

मंगल के जिद देखके कुलदीप भगत कहले, "पता ना कवना जातरा से आज जुलूस निकल बा. हर जगे लखटम लागते आवता. ए नरेश, तनी पंडी जी के बुला के लाव. उनुके से पूछ के जुलूस आगे जाई." नरेश पंडी जी के बुलावे चल गइलें. तभी मंगल के मालिक एगो मास्टर जी के साथे वहां पहुंचनीं.

मंगल दुनू आदमी के गोर छू के पांव लगने आ पूछने कि आवे मे कवनो तरह के दिक्कत त नानूं भइल हअ?

" हां मंगल, तोहार घर खोजे में दिक्कत त जरूर भइल हटे. रेलवे टीसन से उतरला के बाद इहां आए खातिर कवनों सवारी ना मिलल ह त पैदले चल पड़नीहसं." मंगल के मालिक आपन परेशानी बतवलें, ओही टाइम पंडी जी आ गइनी. उहां के गांव के जजमान लोग घेर लेहलस आ मंगल के बात दोहरा देहलस. पंडी जी बोलनीं,

" देखी लोगिन, हम बरहामन हईं. रउरा लोग हमार जजमान हईं. रउरा लोगिन के उहे बात बताएम, जेसे गांव में सुख शांति रहो. भगवान इनरदेव हमनी से नाखुश बाड़ें. पानी ना बरसला से

सुखार हो गइल बा. आदमी त आदमी ह चिरई चुरूंग तक पियास से मर रहल बा. सब कोई के जान पर आफत आ गइल बा. एही से आठजाम चाहे यज्ञ कइल जरूरी बा. यज्ञ में रोग के नाश खातिर अवसधियन के हवन होला. जेसे बेमारी जड़ से ओरा जाला. जब देवता राउर काम करीहेंन त उनका के खुश करे खातिर खस्सी, कबूतर भा सुअर के बलि देवे के पड़ी. ”

पंडी जी के बात सुनके मास्टर साहेब कहनी,

“ पंडी जी, रउरा ठीके कहनी ह. बाकिर बेयाकरन में एगो तद्भव शब्द होला, जवन तत्सम के रूप में आवेला, माने अपना मूल रूप से बदल के आवेला. परम्मपारा में धीरे धीरे बदलाव करत करत अपना मूल रूप से उ साफ बदल जाला. एही तरीका से ई बलि के बात बाटे.”

“ तनी ठीक से बताई मास्टर साहेब, समझ ना आइल!” भीड़ में से मंगल के मालिक कहले.

“ देखल जाव, धरम के परनेता लोग समाज के विकास खातिर बलि देवे के चरचा कइले बा. उहां सभे आदमी के अवगुन के बलि देवे पर जोर देले बानी. अवगुन बड़ा बेढंगा होला, चाहके भी जल्दी मन से ना जाला. समझी कि उ आदमी के मन के घमंड ह. घमंड ना काम चीज ह, ओकरा के छोड़े में भी बड़ा दिक्कत होला. एही तरीका से लोभ, करोध, नशा आदि आदमी के सुभाव में शामिल बा. ई बेकार के चीजो के छोडे में आदमी के जान निकल जाला.

देखी सभे पूजा पाठ में बड़ा ताकत बा. हर साल काली, भगवती, शिव, हनुमान के पूजा होता. रउरा आपना घमंड, अहंकार, आलस, लोभ, करोध के हवन में सवाहा कर दी. जब सभे सवाहा कर दी त समाज से दुख तकलीफ भाग जाई. सभे एक दुसरा के सुख दुख समझी. आफत अइला पर मदद करी..... ” मास्टर अभी बोलते रही कि बीच में कुलदीप महतो सामने आ गइनी आ हाथ जोड़ के कहनी,

“ मास्टर साहेब, रउरा बहुते आछा बात कहनी ह, बाकिर एकरा बारे में वेद,शास्त्र आ ग्रंथ का कहता. ठीक से समुझाई.”

“ मनस्मृति हिंदु धरम के पुरान ग्रंथ हटे. ओकरा पांचवा अध्याय के 51 वां श्लोक में लिखल बा..

अनुमन्ता विशासिता नोहन्ता क्रयविक्रयी।

संस्कर्ता चोपहर्ता च खादकश्चेति द्यातका:।।

एकर माने ई होखेला जे जीव हिंसा में शामिल लोग दोषी होला. पशु वध खातिर धन देवे वाला, जीव के हत्या करे वाला, ओकर मांस कीने वाला, बेचे वाला, खाए वाला सहित आठ लोग ओह जीव के अपराधी होला. आउर देखी मनस्मृति के अध्याय पांच आ श्लोक 45 में लिखल बा-

योडहिंसकानि भूतानि हिनस्त्यात्मसुखेच्छया।

सजीवंश्च मृतश्चैव न क्वचित्सुखमेद्यते ।।

एकर माने ई भइल कि आदमी अपना सुख खातिर अहिंसक पशु के वध करेला, उ जीअते मरल बा. ओकरा जिनगी में सुख कबहीं ना मिली. एकरा बाद याज्ञवल्क्य स्मृति में लिखल बा-

यस्तु प्राणवद्यंकृत्वा देवान्पितरश्च तर्पयेत ।

सोडविद्धाश्चन्दनं दग्धवा कुर्यादंगारलेपनम ।।

एकर माने ई भइल जे आदमी दोसरा परानी के हत्या कके ओकरा मांस से देवी देवता चाहे पितर लोग के तरपन करत बा. उ लोग अइसनके बा,जइसे कवनों मूरख चंदन के जराके ओकरा कोइला से लेप करता. मास्टर साहेब के ज्ञान आ तर्क पर पंडी जी कहलें,

“ बहुत भइल मास्टर साहेब, बहुत भइल. अब रहे दीं. हम अतने जानत रहनीं ह कि हमार दादा परदादा जवन कहले रहीं, ओही तरीका से हमहूं जजमान से डील कर देले बानी. रउरा जातना बतावत बानी, ओतना शास्त्र हम नइखीं पढ़लें. जे जे लोग बलि खातिर कबूतर, खस्सी, सुअर लेके आइल बा. उ अपना घरे लेके वापस जाव. हमरा बुझाता कि जीव हत्या के बारे में पूरा गांव समझ लेले होई. कसाई वाला काम अब ना होई. अपना इष्ट देव के नाम पर जीव हिंसा करेवाला लोग सरग के भागी ना बनी.”

मंगल के कोरसिस से गांव में नया बिहान भइल. सब लोग उनुकर गुनगान करत अपना अपना घरे गइल.

भाग-तेरह

कृपया रचनाकार को मेल भेज कर अपने विचारों से अवगत करायें